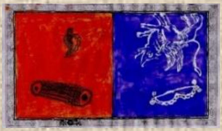
ISBN Number: 978-93-342-3822-8 (Book)
ISSN 2229-547X (online)

विदेह ४१३ म अकं ०१ माच २०२५ (वर्ष १८ मास २०७ अकं ४१३)

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



विदेह मथिली साहित्य आन्दोलन: मानषुीमिह सस्ंकृताम ्



विदेह- प्रथम मथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।



Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

Cover designed by AUM GAJENDRA THAKUR

Videha e-Journal: Issue No. 413 at www.videha.co.in

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

अनक्रुम

ऐ अंकमे अछि:-

पद्य



१.१.अंक ४१२ पर टिप्पणी

आशीष अनचिन्हार

कल्पना झा जी द्वारा लिखल जा रहल "मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान"क भाग सभ पढ़ि रहल छी। एहि आलेखक तेसर भाग (1 फरवरी 2025) मे कल्पनाजी लिखैत छथि जे व्यासजीक पहिल रचनाक प्रेरणा स्रोत ओहि समयक एकटा तर्ज "मसीहा बनके बीमारों को किस पर छोड़ जाते हो" अछि।

ई हमरा जनैत नात छै। एहि नात केर मात्रा क्रम छै 1222-1222-1222-1222 एहि मात्राक्रम केर नाम छै 'बहरे हजज मोसम्मन सालिम'। एहि बहरमे बहुत रास गजल, नात, सलाम, दुआ, फिल्मी गीत आदि लिखल गेल छै। फिल्मी गीतक चर्च करी तऽ

1- बदल जाये अगर माली चमन होता नही खाली
2- खिलौना जानकर तुम तो मेरा दिल तोड़ जाते हो

एकर साफ मतलब भेल जे व्यासजीक लेखन केर मूल प्रेरणास्रोत उर्दू शाइरी अछि आ तँइ एकर रूप एहनो आएल जे व्यासजी उमर खैय्यामक रुबाइ सभहक अनुवाद केलथि। ई अनुवाद विदेह पोथीपर सेहो राखल गेल छै।

नोट- मैथिली गजलमे सेहो एहि बहरपर नीक-नीक गजल लिखल गेल छै जकरा पाठक पढ़ि सकै छथि।

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

गद्य

२.१.कल्पना झा-मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-५



कल्पना झा

मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-५

रिएक्सन मे लिखलनि पहिल उपन्यास 'कुमार'

"असलमे हम रिएक्सन मे 'कुमार'क रचना कएल" ई वक्तव्य छनि उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' जीक।

सर्वविदित अछि जे १९३३ ई. मे प्रकाशित हरिमोहन झाक उपन्यास 'कन्या दान' लोकप्रियताक नब कीर्तिमान स्थापित कएने छलए। मूलतः ई एहन उपन्यास सिद्ध भेल, जे हरिमोहन झा जी केँ तँ लेखकक रूप मे स्थापित कएबे कएलकनि, मैथिली साहित्यक लोकप्रियता सेहो बढ़ौलक। हमरा तँ इहो सुनल अछि जे 'कन्यादान' उपन्यास पढ़बालेल बहुत लोक, जे गैर-मैथिली-भाषी छलाह; सेहो मैथिली सीखब शुरु कएलनि। एहि उपन्यास मे लेखक मैथिल समाज मे व्याप्त अंधविश्वास आ पाखंड केँ देखार कएलनि अछि। संगहि मैथिल समाज मे बेटा आ बेटीक पालन पोषण, पढ़ाइ-

लिखाइ मे जमीन-
आसमानक अन्तर, संगहि मैथिल लोकक संकुचित सोच दिस पाठकक ध्यान आकृष्ट करबाक प्रयास कएने छथि। पोथीक समर्पणे मे मैथिल समाज पर कटाक्ष रूपी प्रहार देखबा/पढ़बालेल भेटि जेतनि पाठक कैँ "जाहि समाज मे बी० ए० पास पतिक जीवन संगिनी ए बी पर्यन्त नहि जनैत छथिन।" मैथिल समाजक नकारात्मक पक्ष कैँ उजागर करैत ई पोथी 'व्यास' जी कैँ बहुत नीक नहि लगलनि। एमहर एहि उपन्यास 'कन्यादान'क लोकप्रियता सँ उत्साहित भ' १९४३ ई. मे एकर अगिला भाग 'द्विरागमन' सेहो प्रकाशित भेलनि हरिमोहन झा जीक। १९४५ ई. में 'प्रणम्य देवता' कथा-
संग्रह सेहो प्रकाशित भेलनि। सभ पोथीक विषय-
वस्तु ओएह...मैथिल समाजक कौचर्य-कुचेष्टा-
खिधांस। किछु लोक हरिमोहन झा जीक पीठ ठोकैत कहथिन -
वाह ! हरिमोहन बाबू वाह ! की बढियाँ लीखल अछि !

मुदा 'व्यास' जी वैचारिक स्तर पर हरिमोहन बाबूक रचनाक संदेश सँ असहमत रहथि। खाली अपन समाजक खिधांस, खाली अपन संस्कृति पर आक्रमण, 'व्यास' जी कैँ नहि अरघलनि। हुनकर कहब छलनि, "मैथिल समाजक उत्कर्ष, आदर्श एवं गरिमामय संस्कृति सँ के नहि परिचित हेताह ? उत्कर्षक कत्तहु चर्चा नहि, मात्र अपकर्षक चर्चा... खाली अपकर्षक चर्चा करैत रहबाक की औचित्य ? एहि सँ मैथिल समाजक मनोबल टूटय लगतैक। लगतैक जेना सभटा खरापे-खराप अछि अपना मिथिला मे।"

संयोगवश एक दिन सतीश बाबू (पूर्व मुख्य न्यायधीश) आ हरिमोहन बाबू आमने-
सामने बैसि क' गप्प करैत रहथि। 'व्यास' जी सेहो ओत्तहि ठाढ़ रहथि। सतीश बाबू व्याकुल जकाँ हरिमोहन बाबू सँ पुछलथिन -

"ई की अहाँ अपन समाजक खाली खिधांस लिखैत छी ? अपन समाजक उत्कर्ष पर लिखू !"

'व्यास' जी केँ सेहो नहि रहल गेलनि। तखन ओ पढ़ितहि छलाह। तथापि ओहो निवेदन कएलथिन - "ठीके... प्रोफेसर साहेब, अपने की-कहाँ लिखने जा रहल छियैक ! बहुत अनुचित भ' रहल छैक।"

तकर बाद तँ जेना प्रलय भ' गेलनि 'व्यास' जी लेल। हरिमोहन बाबूक आँखि लाल-
लाल भ' उठलनि। 'व्यास' जी दिस आग्नेय नेत्र सँ ताकैत बजलाह -
अहाँ विद्यार्थी छी....अहाँ की टुभ-
टुभ बजैत छी..... अहाँ की बुझैत छिऐक..... अहाँ केँ कोन ज्ञान ?

'व्यास' जी स्तब्ध रहि गेलाह। तत्काल तँ ओ कोनो उत्तर नहि द' सकलथिन। सोचलनि,
"आब लेखनक माध्यमे हम हरिमोहन बाबू केँ उत्तर देबनि।" तकर बाद 'व्यास' जी एक आदर्श व्यक्तित्व केँ मुख्य पात्र बनाए उपान्यास लिखब आरम्भ कएलनि। इएह उपन्यास पछाति 'कुमार' नाम सँ प्रकाशित भेलनि।

कुमार उपन्यास 'व्यास' जी लिखलनि जखन ओ कुमारे छलाह। पाण्डुलिपि मुजफ्फरपुर मे मित्र उमानाथ बाबू केँ द' देने छलथिन। प्रूफ-
आदि देखबाक भार हुनके उपर छलनि। तहिया उमानाथ बाबू मुजफ्फरपुर मे रहैत छलाह। छपबा मे बड़ समय लगलनि। बिआह आ चतुर्थी आदिक बाद जखन 'व्यास' जी मुजफ्फरपुर पहुँचलाह तँ पाँच-
सात प्रति कुमारक छपल भेटलनि। कहबाक माने कुमार मे लिखल 'कुमार' उपन्यासक प्रकाशन तखन भेलनि जखन 'व्यास' जी विवाहित भ' गेल छलाह।

कुमार उपन्यास पर 'व्यास' जीक समकालीन लेखक लोकनिक बहुत नीक -नीक प्रतिक्रिया अएलनि।

सबसँ बेसी प्रशंसा कएलथिन 'सुमन'जी । ओ कहलथिन -
'व्यास'जी अहाँ रुचिए बदलि देलियैक पाठकक... खाली विवाह ... द्विराग मन .... विवाह-द्विरागमन -
इएह उपन्यासक विषय रहइक ... अपने मौलिक उपन्यास लिखल अछि । रमानाथ बाबू, तंत्रनाथ बाबू, सभक प्रशंसा भेटलनि। हरिमोहन बाबू सेहो पीठ ठोकलथिन। आशीर्वाद देलथिन।

'व्यास' जीक वस्तुत: आदर्शोन्मुखी विचारधाराक लोक छलाह। हुनकर लेखनी मे सेहो तकर झलक स्पष्ट देखल जा सकैछ। दुष्ट चरित्रक चित्रण करए नहि चाहैत छलाह 'व्यास' जी। आदर्श चरित्र कैँ 'हाइलाइटेड' करब हिनकर स्वभाव-
अनुकूल लक्षण कहि सकैत छी। दुष्टहु लोकक चरित्र मे गुण देखा, ओकरा मानव बना दैत छलाह। कथानकक अनुरूपेँ कतहु-
कतहु पुरुष चरित्र मे दूषणता भेटियो सकैए, मुदा हिनका द्वारा चित्रित स्त्रीगण सर्वथा शुद्ध ओ निर्दुष्ट भेटतीह। ई 'व्यास' जीक नीक लोक बला छवि जे छलनि, आदर्श व्यक्तित्व बला छवि, से हिनकर लेखनी पर सभदिन हावी रहलनि। ई एकटा अकाट्य सत्य अछि।

समाज मे आदर्श स्थापित करबाक प्रयास हिनकर लेखनी मे यत्र-
तत्र अभरत। ध्यान देबाक बात अछि, जे सुधारवादी सन 'ऐटिट्यूड' नहि देखाएत हिनकर लेखनी मे, हँ...आदर्शवादी अवश्य देखाएत। चूँकि ओ स्वयं अपन व्यक्तिगत जीवन मे एकटा आदर्श पुत्र, आदर्श अग्रज, आदर्श पति, आदर्श पिता आ कर्म-
क्षेत्र मे आदर्श अभियन्ता बनि क' सभठाम आदर्श स्थापित करैत रहलाह।

से हिनकर रचना मे जँ परिलक्षित भ' जाइत अछि, तँ से कोनो आश्चर्यक गप्प नहि ने ?

संपादकीय सूचना-एहि सिरीजक पुरान क्रम एहि लिंकपर जा कऽ पढ़ि सकैत छी-

मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-1
मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-2
मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-3

मैथिली साहित्यमे उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' एवं हुनक परिवारक योगदान-4

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.२.प्रमोद झा 'गोकुल'-शाहीन बाग



प्रमोद झा 'गोकुल'

शाहीन बाग

भारत सरकार मुर्दाबाद! नागरिकता कानून वापस लो!!!
आदि शासन बिरोधी नारा लगबैत जनी जैत आ बाल बुदरुकक संग संगोर करैक लेल अबदुल्ला पहुँचल मंजूर अलीक दलान पर ।ओत ओ सब आर जोर जोर सँ प्रधानमंत्री आ गृहमंत्रीक विरोध मे चिचिया लागल सोर सराबा सुनि मंजूर अली आ ओकर पत्नी अपन छोट छोट छोट बच्चाक संग धरफरा के बाहर निकलल आ अकचका के ओ अबदुल्ला सँ पूछि बैसल---कथीक हुजूम छियै ई भाइजान!
-अरे , तोरा कुछो नै बूझल छह ?अबदुल्ला बाजल ।
-न्न, हमरा ते नै बूझल अछि! अबैत बाजल मंजूर ।
-नै बूझल छह ते सुनह!

-हँ हँ कहह !

-यैह जे शाहीन बाग मे बड़का धरना प्रदर्शन भय रहल छै,ओइमे कतेको पाटीक बड़का बड़का नेता आ अपना आरूक लीडरक संग मुल्ला मौलबी सेहो सिरकत कय रहल छै ।जनाना आ बुदरूक सब के तिरंगा संगेँ बुलौलकैहे ,तेँ सब जा रहल छै ओत्तै ।एकटा तूँ जे अकान बनल छह ।धू मरदे..

-बात के बतंगर किएक बनबैत छह? हमहूँ ते सएह पूछै छिअह जे कथीक धरना प्रदर्शन भय रहल छै?

-नीक नहैंतते अपना आरुक लीडरे बतौतह ,ओना हमरा इएह बूझल अछि जे सरकार एगो नागरिकता कानून पास केलकैहे ,जकरा मुताबिक बाहरी हिन्दू सिख इसाइ आ पारसी सब जे एत' आबि चुकल छै आ जे आब'बला छै तकरा सब के सादर नागरिकता भेटतै मुदा अपन मोहमडन के नै ।बाहरी जतेक अपन बिरादरिक लोक रोजी रोटीक टोह में एत'आयल छै ओकरा सब के खदेर के बैला देतै ।आब तोहीं कहह की ई उचित भेलै?

-अनुचित की भेलै से कहह ने! ऐँ हौ! पाकिस्तान बँगला देश आ अफगानिस्तान आदि जगह से जे अपन बिरादरिक लोक एत एलै से की करैले? एकरा सबके अपन देश मे कोनो दिक्कत नै छलै तखन जे एत एलै से मात्र दंगा फसादे मचबैले ने!सरकार आ देश जखन एकरा सब से आजिज भय गेलैए तखन ओकरा ऐ तरहक निर्णय लेबय पड़लै ,से ते बुझहक! दोसर बात हिन्दू सिख इसाइ आ पारसी के ओतुक्का सरकार आ लोक दुर्दशा कयके राखि देलकै ।इज्जत आबरू धर्म आ धन सब दाव पर लागि गेलै ओकरा सबहक ।ने ओ सब ओत' सोतंत्र भय के जिबिये सकैये आ ने भरिये सकैये ।

एतबा सुनैत देरी अबदुल्ला आगि बबूला भय गेल ।ओ मंजूर अली के गरियबैत बाजल- साला तूँ हिन्दूक संग पूरि काफिर जकाँ बात करै छैँ!

-काफिर तूँ कि हम ?मंजूर अली बाजल ।

- तूँ साला मादर चो..!

-खबरदार! मूह सम्हारि के बाज नै ते ..

-नै ते की?

-रे चोट्टा! हमरा लेल पैहने देश आ एतूक्का अनमोल भारतीय संस्कृति आ सभ्यता ,तखन मजहब ।भारतक खूजल आसमानक नीचाँ रहि हमरा सब बेरोक टोक अपन धार्मिक अनुष्ठान करैत निर्भय जीबि रहल छी ।कहाँ केओ हमरा सब के प्रताड़ित करैये प्रत्युत सब एक दोसराक सुख दुःख नीक बेजाय मे जाति धर्म बिसरि सहभागी बनि हिल मिल के आनन्द पुर्बक रहि रहल छी तखन ई बेसुराह सुर किएक?

-नत होइत अबदुल्ला बाजल- भाइ जान! तों ठीके कहै छह,हमहीं भटकि गेल छलौं नेतबा सबहक झाँसा मे आबि के ।माफ कय दैह हमरा! ठीके एहन सुख शान्ति कोनो मुस्लिम देश मे कहाँ छै ?बिना भेद भाव के संविधान हमरा सब के सबटा अधिकार दैत अछि ।

--प्रमोद झा "गोकुल", दीप,मधुवनी (विहार), फोन+९८७१७७९८५१

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.३.परमानन्द लाल कर्ण-तीर्थक्षेत्रक माहात्म्य-३

परमानन्द लाल कर्ण

तीथर्क्षेत्रेक माहात्म्य-३



গতাঁক সঁ আগ্ৰ ......

তীর্থক্ষেত্রক মাহাত্ম্যে

(পদ্‌ম পুরাণ সৃষ্টি খণ্ড)

জে কেও একবা রৌবি গঁগা জী মে নহা কহ পবিত্র ভহ গেল ছথি , ও কেতরো পাপ কেনে ছথি , তৈযো ও নবক মে নহি জাযত ছথি । হমবা স্বনহ মে আযল অছি জে ব্রত , দান , তপ ,যজ্ঞ আ স্বচিতাক নেন দোসব সাধন গঁগা জীক এক বুঁদ সঁ অভিষিঞ মানুষক সমানতা নহি কহ সকৈত ছথি । জে ধর্মক দ্রবীভূতস্বরূপ ছথি ,জল আদিক কাবণ ছথি, ভগরান বিষ্ণুক চবণ সঁ প্রকট ভেল ছথি আ জিনকা ভগরান শঁকব অপনা মাথ পব বাখনে ছথি , ও গঁগাজীক নির্মল জল প্রকৃতি সঁ পবে নির্গুণ ব্রহ্ম অছি , এহি মে কোনো সঁদেহ নহি অছি । ব্রহ্মাণ্ড মে এহন কোনো বস্তু নহি অছি জে গঁগা জলক ববাববি কহ সকথি । জে কেও সএ যোজন দূব সঁ গঁগা-গঁগা কহৈত ছথিন ও লোকনি নবক মে নহি জাযত ছথি । নবকগামী পাপ কর্ম দোসব কোনো উঁপায সঁ তক্োন নষ্ট নহি ভহ সকৈত অছি ; তেঁ লোকনি কেঁ গঁগাজীক জল সঁ স্নান কব'ক চাহী ।

নাবদ জী কহৈত ছথিন - বাজন ! তদন্তব তীর্থ যাত্রী কেঁ বিশ্ববিখ্যাত স্বগন্ধ নাম সঁ তীর্থ স্থনক যাত্রা কব'ক চাহী । ওহি ঠাম সব পাপ সঁ চিত্ত স্বচ্ছ ভহ গেলা পব লোকনি ব্রহ্মলোক মে প্রতিষ্ঠিত হোযত ছথি । গঁগা আ সবস্বতীক সঁগম মে স্নান কবহ বালা লোকনি কেব অশ্বমেধ যজ্ঞক ফল মিলৈত অছি । ওহি ঠাম কর্ণহ্রদ মে নহেলা আ ভগরান শঁকবক পূজা কবলা সঁ কখনঁ দুর্গতি নহি হোযত অছি । একব বাদ কুব্জাম্রক নাম সঁ তীর্থ স্থন দিস জাযবাক চাহী । ওহি ঠাম স্নান কবলা সঁ সহস্র গোদানক ফল মিলৈত অছি । একব বাদ অরুন্ধতীবটক যাত্রা কব'ক চাহী । ওহি ঠাম সাগবক জল সঁ স্নান কহ তীন বাতি উঁপবাস কবহ বালা

নোকনি সহস্র গোদানক ফন পারৈত ছথি শ্বা সূক্ষ্মনোক মে প্রতিষ্ঠিত হোযত ছথি। তদন্তব ব্ৰঁবহ্মারর্ত তীর্থক যাত্রা কব'ক চাহী। ওহি ঠাম ব্ৰঁবহ্মচর্যক পানন কবৈত একাগ্রচিত্ত ভহ স্নান কবনা সঁ নোকনি শ্বশ্বমেধ যজ্ঞক ফন পারৈত ছথি শ্বা সূক্ষ্মনোক জাযত ছথি। তকব রাদ যম্বনাপ্রভর নাম সঁ তীর্থ স্থনক যাত্রা কব'ক চাহী। ওহি ঠাম যম্বনাজীক জন মে স্নান কবনা সঁ নোকনি শ্বশ্বমেধ যজ্ঞক ফন পারৈত ছথি শ্বা ব্ৰঁবহ্মনোক মে প্রতিষ্ঠিত হোযত ছথি। দর্রী সঁক্রমণ নাম সঁ তীর্থ স্থন তীন্ব নোক মে রিখ্যাত শ্বছি, জাহি ঠাম স্নান কবনা সঁ শ্বশ্বমেধ যজ্ঞক ফন মিনৈত শ্বছি শ্বা নোকনি সূক্ষ্মনোক পারৈত ছথি। ভৃগ্বতর্শ্বী তীর্থ মে গেনা সঁ শ্বশ্বমেধ যজ্ঞক ফন মিনৈত শ্বছি। রীবপ্রমোক্ষ নাম সঁ তীর্থক যাত্রা কহ নোকনি সর পাপ সঁ ম্বঞ্জ ভহ জাযত ছথি। গ্নতিকা শ্বা মঘাক দ্বর্নভ তীর্থ স্থন পব গেনা সঁ প্বণ্য কবহ রানা নোকনি শ্বগ্নিষ্টোম শ্বা শ্বতিবাত্র যজ্ঞক ফন পারৈত ছথি।

তপ্শ্চাত্ সন্ধ্যা তীর্থ স্থন,জে পবম উঁত্তম রিদ্যা তীর্থ নাম সঁ প্রসিদ্ধ শ্বছি, জে কেও এহি ঠাম স্নান কবৈত ছথি, ও সর রিদ্যা মে পাবঁগত ভহ জাযত ছথি। মহাশ্রম তীর্থ সর পাপ সঁ ম্বক্তিপ্রদাতা শ্বছি। ওহি ঠাম বাতি মে রুক'ক চাহী। জে কেও ওহি ঠাম একন্ধ সময উঁপরাস কবৈত ছথি, ও উঁত্তম নোক মে জাযত ছথি। জে তীন দিন পব এক সময উঁপরাস কবৈত এক মাস ধবি মহাশ্রম তীর্থ মে রুকৈত ছথি, ও শ্বপনে তহ ভরসাগব পাব কহ নৈত ছথি সঁগহি-সঁগ শ্বপনা শ্বাগ্ব-পাছ্ব দস-দস পীঠী কেঁ তাবি দৈত ছথি। পবম পরিত্র দেররন্দিত মহেশ্বৰক দর্শন কহ নোকনি সর কর্ত্তরা সঁ উঁঋণ ভহ জাযত ছথি। তকব রাদ পিতামহ সঁ সেরিত তীর্থ স্থনক নেন প্রস্থান কবরাক চাহী। ওহি ঠাম গেনা সঁ নোকনি শ্বশ্বমেধ যজ্ঞক ফন পারৈত ছথি শ্বা ষ্মনকা পবম গতি মিনৈত ছৈন।

তপ্শ্চাত্ ব্ৰঁবাহ্মণিকা তীর্থ স্থন পব জা কে ব্ৰঁবহ্মচর্য ব্রতক পানন কবৈত একাগ্রচিত্ত ভহ স্নান কবনা সঁ মান্বষ কমন সন রিমান পব বৈঁসি ব্ৰঁবহ্মনোক জাযত ছথি। তকব রাদ দ্বিজ নোকনি সঁ সেরিত প্বণ্যময নৈমিষ তীর্থ স্থনক যাত্রা কব'ক চাহী। ওহি ঠাম ব্ৰঁবহ্মা জী দেরতাক সঁগ সদি খন নিরাস কবৈত ছথি। নৈমিষ তীর্থ স্থনক যাত্রাক ওচ্ছা কবহ রানা নোকনি কেঁ শ্বাধা পাপ নষ্ট ভহ জাযত শ্বছি। নৈমিষ তীর্থ স্থন পব গেনা সঁ নোকনি সর পাপ সঁ ম্বঞ্জ ভহ জাযত ছথি। বুদ্ধিমান নোকনি কে এহি তীর্থ স্থন পব এক মাস ধবি রুক'ক

চাহী ।ছমণ্ডন পব জতেক তীর্থ স্থন ঋছি ,ও সর নৈমিষাবণ্য মে রিছমান ঋছি । ওহি ঠাম জে নেম-নিষ্ঠা সঁ বহৈত রিধি-রিধান সঁ ঋাহাব গ্রহণ কবৈত ছথি , ও বাজসূয যজ্ঞক ফন পারৈত ছথি । এতরে নহি ও ঋপন ক্ষনক সাত পীঠী ধবি কেঁ পরিত্র কহ দৈত ছথি ।

গন্ধৌদ্ভেদ তীর্থ স্থন পব জা কে তীন বাতি ধবি সহহ রানা নোকনি কেঁ রাজপেয যজ্ঞক ফন মিনৈত ঋছি ঋা ও ব্রঁবহ্মস্বৃকপ ভহ জাযত ছথি । সবস্বৃতীক তঠ পব দেরতা ঋা পিতবক তর্পণ কব'ক চাহী । এহন কবহ রানা নোকনি সাবস্বৃত নোক মে ঋানন্দ ভোগৈত ছথি , এহি মে সন্দেহ নহি । তকব রাদ রাঁহ্মদা নদীক যাত্রা কব'ক চাহী । ওহি ঠাম একহ্ম বাতি রুকনা পব নোকনি স্বৃহ্ম নোক মে প্রতিষ্ঠিত হোযত ঋছি । তকব রাদ সবযূ নদীক উঁত্তম তীর্থ স্থন গ্বপ্তাব ঘাঠ দিস গমন কব'ক চাহী । এহি ঠাম স্নান কবনা সঁ নোকনি সর পাপ সঁ ম্বঞ ভহ স্বৃহ্মনোক মে পূজিত হোযত ছথি । গোমতী নদীক বামতীর্থ মে স্নান কহ নোকনি ঋশ্বৃমেধ যজ্ঞক ফন পারৈত ছথি ঋা ঋপনা ক্ষনক উঁদ্ধাব কবৈত ছথি । ওহি ঠাম শতসাহস্রক নাম সঁ তীর্থ স্থন ঋছি ; জে কেও ওহি ঠাম স্নান কহ নেম নিষ্ঠা সঁ ভোজন কবৈত ছথি , হ্মনকা সহস্র গোদানক ফন মিনৈত ঋছি । ওহি ঠাম সঁ উঁর্ধ্বস্থান নাম সঁ উঁত্তম তীর্থ স্থন পব জায কেব চাহী । ওহি ঠাম কোঠিতীর্থ মে স্নান কহ কার্তিকেযজীক পূজন কবনা সঁ সহস্র গোদানক ফন মিনৈত ঋছি । তকব রাদ কাশী মে জা কে ভগরান শংকবক পূজা ঋা কপিনক্ষণ্ড মে স্নান কব'ক চাহী ,তাহি সঁ বাজসূয যজ্ঞক ফন মিনৈত ঋছি ।

যধিষ্ঠিব কহননি - ম্বনিরব ! কাশীক মাহাম্ম্যে রিস্তাব সঁ কহ্ম ।

নাবদ জী কহননি - বাজন্ ! হম এহি রিষয মে এক সংরাদ স্বনারৈত ছী ,জে রাবাণসীক গ্বণ সঁ সম্বৃক্ষিত ঋছি ।এহি সংরাদক শ্রৱণ মাত্র সঁ ব্রঁবহ্মহত্যাক পাপ সঁ ছুঠকাবা পারি নৈত ছথি । এক সমযক রাত ঋছি , ভগরান শংকব মেরুগিবিক শিখব পব দেরী পার্রতীক সঁগ সিংহাসন পব রৈসন ছনাহ । দেরী মহাদের সঁ প্বছনথিন - হে ভঞক দ্বঃখক হর্তা দেরাধিদের ! মন্বষ্য কোনা ঋপনেক দর্শন কহ সকৈত ছথি ? সর নোকনিকক হিতক নেন ঞা রাত হমবা রতাউঁ ।

ভগরান শির কহলনি - দেরী ! কাশীপ্বরী হমব গ্বহ্যতম ঞ্চেত্র শ্বছি । ও সর জীর কে সঁসাব সাগব সঁ পাব কবহ রানা শ্বছি । ওহি ঠাম মহাম্যো নোকনি ভক্তি ভার সঁ হমব ভক্তিক শ্বাশ্রয নহ কে নীক নিযমক পানন কবৈত নিরাস কবৈত ছথি । ও সর তীর্থ মে উঁত্তম শ্বছি । এতরে নহি , শ্বরিম্বক্ত ঞ্চেত্র হমব ছ্মান শ্বছি শ্বা সর ছ্মান মে উঁত্তম শ্বছি । রাবাণসী সর গোপনীয স্থান মে শ্রেষ্ঠ শ্বা রেসী প্রিয শ্বছি । রাবাণসী মে কএন গেন দান ,জপ ,হোম ,যজ্ঞ, তপ,ধ্যান ,শ্বধাযন শ্বা ছ্মান শ্বঞ্চয বহৈত শ্বছি । পহিশ্বক হজাবো জন্মক সঁচিত পাপ এহি শ্বরিম্বক্ত ঞ্চেত্র মে প্ররেশ কবৈত নষ্ট ভহ জাযত শ্বছি । ব্র্বাহ্মণ ,ঞ্চত্রিয, রৈশ্য, শ্বদ্র, রর্ণশঁকব, স্ত্রীজাতি, মনেচ্ছ, চাণ্ডান শ্বাদি ,পাপযোনি মে উঁপ্তন্ন জীর ,কীট,চীঁটী শ্বা পশ্ব-পঞ্চী শ্বাদি জতেক জীর শ্বছি , ও সর সমযান্বসাব শ্বরিম্বক্ত ঞ্চেত্র মে মবনা পব হমবা শ্বন্বগ্রহ সঁ পবমগতি পারৈত ছথি । মোঞ্চ মে দ্বর্নভ শ্বা সঁসাব কে ভযারহ মানি নোকনি কে রাবাণসী মে নিরাস কব'ক চাহী । জে রিদ্বদজন কতেকো রিঘ্ন সঁ শ্বাহত ভেনাক রাদঞ্চ কাশীপ্বরী মে নিরাস কবৈত ছথি , শ্বনকা পবম পদ মিনৈত ছৈন । কাশীপ্বরী মে বহনিহাব জীর জন্ম, মৃত্যু শ্বা রৃদ্ধারস্থা সঁ বহিত পবমধাম পারৈত ছথি । শ্বনকব রএহ গতি হোযত শ্বছি , জে মোঞ্চাভিনাষী নোকনি কে মিনৈত শ্বছি শ্বা জে পারি জীর গ্বতার্থ ভহ জাযত শ্বছি । শ্বরিম্বক্ত ঞ্চেত্র মে জে উঁত্থেষ্ঠ গতি মিনৈত শ্বছি ,ও কতঞ্চ দান , তপ, যজ্ঞ শ্বা রিদ্যা সঁ নহি মিন সকৈত শ্বছি । শ্বরিম্বক্ত ঞ্চেত্র পবম ছ্মান,পবম পদ ,পবম তত্ত্র শ্বা পবম কন্যাণময শ্বছি। রাবাণসীপ্বরী মে ত্রিপথগামিনি গঁগা কতেকো জন্মক পাপ কেঁ নষ্ট কহ দৈত শ্বছি । গঁগাজীক শ্বন্যত্র স্নান ,শ্রাদ্ধ,দান ,তপ, জপ শ্বা ব্রত স্বনভ শ্বছি ; ম্বদা রাবাণসী মে বহৈত শ্বা শ্বরসব দ্বর্নভ শ্বছি । পাপী,শঠ শ্বা শ্বধার্মিক নোকনি সেহো রাবাণসী মে চনি জাথি তহ ও শ্বপন স্ব ঞ্চন কে তাবি দৈত শ্বছি । জে কেও রাবাণসী মে হমব পূজা শ্বা স্তুতি কবৈত ছথি ,ও সর পাপ সঁ ম্বক্ত ভহ জাযত ছথি। জে হমব ভক্তনোকনি রাবাণসী মে বহৈত ছথি ও একহি জন্ম মে মোঞ্চ পারি নৈত ছথি । এহি ঞ্চেত্র মে দেহারসান ভেনা পব হমহি শ্বনকা তাবক ব্র্বহ্মক উঁপদেশ দৈত ছী । রাবাণসী সঁ নীক কোনো দোসব স্থান নহি শ্বছি শ্বা নহি হোযত । এহি ঠাম স্বযঁ ভগরান নাবাযণ শ্বা হম দেরেশ্বব রিবাজমান ছী । মহাপাতকী শ্বা পাপাচাবী সেহো রাবাণসী মে শ্বারি পবমগতি পারৈত ছথি ।

নাবদ জী কহৈত ছথিন - বাজন্ ! জেনা দেরতা মে প্বরুষোত্তম নাবাযণ ,ঞশ্বৈ মে মহাদের শ্রেষ্ঠ ছথিন তহিনা সর তীর্থ স্থন মে কাশীপ্ববী উত্তম থ্বছি । জে কেও এহি প্ববীক স্মবণ থ্বা নামোচাবন কবৈত থ্বছি , ষ্মনকব এহি জন্ম থ্বা পূর্রজন্মক সর পাপ নষ্ট ভয় জাযত থ্বছি ।

নাবদ জী কহৈত ছথিন - ষধিষ্ঠিব ! রাবাণসি মে কপর্দীশ্বৈ নাম সঁ একটা প্রসিদ্ধ শিরলিঁগ থ্বছি , জে থ্বরিনাসী মানন গেন থ্বছি । ওহি ঠাম স্নান কয় পিতবক রিধি-রিধান সঁ তর্পণ কবনা সঁ নোকনি সর পাপ সঁ মুক্ত ভয় মোক্ষ পারি নৈত ছথি । কপর্দীশ্বৈ পূজন কবনা সঁ কাম,ক্রোধ থ্বাদি দোষ নষ্ট ভয় জাযত থ্বছি। কপর্দিশ্বৈ মে নেম নিষ্ঠা সঁ ধ্যানবত শান্তচিত্ত যোগী নোকনি ছহ মাস মে যোগসিদ্ধি পারি নৈত ছথি ,এহি মে কোনো সঁদেহ নহি থ্বছি । পিশাচমোচন কুণ্ড মে স্নান কয় কপর্দীশ্বৈ পূজন সঁ ব্রহ্মহত্যা থ্বাদি পাপ নষ্ট ভয় জাযত থ্বছি ।

রড়ড প্ববান রাত থ্বছি , কপর্দীশ্বৈ ক্ষেত্র মে উত্তম ব্রতক পাননহাব একটা তপস্বী ব্রাহ্মণ বহৈত ছনাহ । ষ্মনকব নাম শঁঙ্ককর্ণ ছন । ও সরদিন ভগরান শঁকবক পূজন ,রুদ্রী পাঠ থ্বা সদিখন ব্রহ্মস্বরূপ প্রণরক জপ কবৈত ছনাহ । ও মবণপর্যন্ত কাশী মে বহি নেম নিষ্ঠা সঁ ফুন,পাত,স্তোত্র র প্রবিক্রমা থ্বাদি সঁ ভগরান কপর্দীশ্বৈক থ্বাবাধনাক সঁকন্প নেনে ছনাহ । এক দিনক রাত থ্বছি , একটা দুখন প্রেত ষ্মনকা সোমা মে ঠাঢ় ভয় গেন ।ঞ দেখি শঁঙ্ককর্ণ কেঁ ষ্মনকা পব দযা থ্বাযন । ও প্বছননি - থ্বহাঁ কে ছী ? থ্বহাঁ কোন ঠাম সঁ থ্বাযন ছী ? পিশাচ দুখন ছন । ও শঁঙ্ককর্ণ সঁ কহননি - মুনিরব ! হম পূর্রজন্ম মে ধন-ধান্য সঁ সম্পন্ন ব্রাভন ছনহুঁ । হমব ঘব প্বত্র-পৌত্র থ্বাদি সঁ ভবন ছন । মুদা হম কুটুম্বক ভবণ পোষণ মে থ্বাসক্ত ভেনাক কাবণ কখনহু দেরতা,গায থ্বা থ্বতিথীক পূজন নহি কয় সকনহুঁ । কখনহু থোড়রহু প্বণ্যক কাম নহি কেনহুঁ । হম থ্বখন দুখন প্যাসন ভেনাক কাবণ হিত থ্বা থ্বহিতক ছ্ঞান রিঁসবি গেনহুঁ থ্বছি । প্রভো ! জোঁ থ্বহাঁ হমব উদ্ধাবক কোনো উপায জানৈত ছী , তহন হমবা রতাউ । হম থ্বপনেক শৈবণ মে থ্বাযন ছী ।

শঁঙ্ককর্ণ কহননি - থ্বহাঁ একাগ্রচিত্ত ভয় এহি কুণ্ড মে স্নান করু,জাহি সঁ তবতহি এহি যোনি সঁ ছুটকাবা পারি নের । মুনি কে এনা কহনা পব পিশাচ

ত্রিনেত্রধবী দেরেশ্বৃব ভগরান কপর্দীশ্বৃবক স্‌মবণ কহ একাগ্রচিত্ত সঁ স্বত্ত মে ডুব়্‌কী নগেননি । ডুব়্‌কী নগরৈত ও পিশাচক শৈবীব সঁ ম্বক্তি পারি নেনথি । পিশাচক ম্বক্তি দেখি ম্বনি প্রসন্নচিত্ত ভহ ভগরান মহেশ্বৃবক এনা স্তুতি কবহ নগনাহ -

কপর্দিনং ত্বাং পবতঃ পবস্তাদ্ গোপ্‌তাবমেকং প্বক্বষং প্ববাণম্‌ ।

ব্রজামি যোগেশ্বৃবমিশিতাবমাদিহমগ্নিং কপিনাধিকঠম ॥

অহাঁ জঠা-জ্বট ধাবণ কবনাক কাবণ কপর্দী কহাবৈত ছী । অহাঁ প্রাপ্‌ব, সরহক বঞ্চক,এক-অদ্বিতীয ,প্ববাণ-প্বক্বষ, যোগেশ্বৃব, ঙশ্বৃব,আদিহ ,অগ্নিকপ আ কপিন রর্ণক রূষভ পব আকঢ ছী ।

ত্বাং ব্র্‌বহ্মসাবং হৃদি সংনিনিষ্ঠং হিবণ্‌মযং যোগিনমাদিমন্তম্‌ ।

ব্রজামি ক্বদ্রং শবণং দিরিষ্ঠং মহাম্বনি ব্র্‌বহ্মমযং পবিত্রম্‌ ॥

অহাঁ সরহক হৃদয মে স্‌থিত সাবহুত ব্র্‌বহ্ম ,হিবণ্ময প্বক্বষ, যোগী আ সরহক আদি র অন্ত ছী । অহাঁ দ্বঃখক হবনিহাব ক্বদ্র কহাবৈত ছী ।অহাঁ আকাশ মে স্‌থিত ,মহাম্বনি,ব্র্‌বহ্মস্বৃকপ আ পবম পবিত্র ছী ।

সহস্রপাদাক্ষিশিবোহভিম্বক্তং সহস্রকপং তমসঃ পবস্তাত্‌ ।

তং ব্র্‌বহ্মপাবং প্রণমামি শংভ্বং হিবণ্যাগর্ভাদিপতি ত্রিনেত্রম্‌ ॥

অহাঁ সহস্র চবণ,নেত্র আ মাথ সঁ ম্বক্ত ছী । অহাঁক সহস্র কপ অছি, অহাঁ অন্ধকাব সঁ পবে আ রেদক পাঁচ সঁ বাঁহব ছী ,অহাঁ কন্যাণোপ্‌পাদক ভেনাক কাবণ শংভ্ব কহাবৈত ছী , অহাঁ হিবণ্যগর্ভ আদি দেরতাক স্বামী আ ত্রিনেত্র সঁ স্বশোভিত ছী , হম অপনেক নমন কবৈত ছী ।

যত্র প্রসূতির্জগতো রিনাশো যেনাবৃতং সর্রমিদং শিরেন ।

তং ব্র্‌বহ্মপাবং ভগরন্তমীশং প্রণম্য নিহং শবণং প্রপদ্যে ॥

জিনকা মে এহি জগতক উঁপ্‌পত্তি আ রিনাশ সমাহিত অছি , জে শিরস্বৃকপ পবমাত্মা এহি সমস্ত দৃষ্ট-প্রপংচ কেব ব্যাপ্‌ত কেনে ছথি আ জে রেদক সীমা সঁ পবে ছথি , তাহি ভগরান শংকব কে নমন কহ হম হ্নকা শবণ মে আযন ছী ।

আনিঙ্গমানোকরিহীনকপং স্বযংপ্রভ্বং চিপ্‌পতিমেককপম্‌ ।

তং ব্র্‌বহ্মপাবং পবমেশ্বৃবং ত্বাং নমস্‌কবিষ্যে নে যতোহন্যদস্তি ॥

জে নিঙ্গবহিত,আনোকশূন্য,স্বযংপভ্ব, চেতনাক স্বামী এককপ আ ব্র্‌বহ্মাজী সঁ উঁপ্প্রেষ্ঠ পবমেশ্বৃব ছথি ; জিনকা সিরা দোসব কোনো রস্তু নহি অছি আ জে রেদ সঁ পবে ছথি , তাহি ভগরান কে হম নমন কবৈত ছী ।

যঁ যোগিনস্ত্যজসরীজযোগা নহ্ধ্বা সমাধিঁ পবমাম্েহতাঃ ।
পশ্যন্তি দেরঁ প্রণতোঽস্মি নিহঁ তঁ র্ব্বন্ধপাবঁ ভরতঃ স্বকপম্ ॥

সরীজ সমাধীক হাগ আ নির্রীজ সমাধি কেব সিদ্ধ কহ পবমাম্েকপ যোগী নোকনি জেকব সাক্ষাত্কোব কবৈত ছথি আ জে রেদ সঁ পবে ছথি, ও অপনেক স্বকপ অছি ।

ন যত্র নামাদিরিশৈষকূ৽পৃতির্ন সদৃশৈ তিষ্ঠতি যস্েরকপম্ ।
তঁ র্ব্বন্ধপাবঁ প্রণতোঽস্মি নিহঁ স্বযঁম্ভরঁ ব্লী শৈবনঁ প্রপদ্যে ॥

জাহি ঠাম নাম আদি রিশৈষণক কন্পনা নহি অছি , জিনকব স্বকপ দৃষ্টিগোচব নহি হোযত অছি ; জে স্বযঁম্ভূ কাবণহীন আ রেদ সঁ পবে অছি , তাহি ভগরান শিরক শৈবণ মে ছী আ সদি খন অপনেক নমন কবৈত ছী ।

যদ্ রেদরাদভিবতা রিদেহঁ সর্ব্বন্ধরিজ্ঞানমভেদমেকম্ ।
পশ্যন্ত্যনেকঁ ভরতঃ স্বকপঁ তঁ র্ব্বন্ধপাবঁ প্রনতোঽস্মি নিহম্ ॥

জে দেহ সঁ বহিত, র্ব্বন্ধ,রিজ্ঞানময, ভেদশূন্য আ অদ্বিতীয ছথি ; তৈযো রেদরাদ মে আসক্ত নোকনি জিনকা মে অনেকতা দেখৈত ছথিন, তাহি রেদাতীত স্বকপ কেঁ হম সদিখন নমন কবৈত ছী ।

যতঃ প্রধানঁ প্বরুষঃ প্ববাণো রিঁভর্তি তেজঃ প্রণমন্তি দেরাঃ ।
নমামী তঁ জ্যোতিষি সঁনিরিষ্ঠঁ কানঁ হুঁহন্তুঁ ভরতঃ স্বকপম্ ॥

জিনকা সঁ প্রকৃতিক উঁপ্েত্তি ভেন অছি, প্ববাণপ্বরুষ অহাঁ জাহি তেজক কপ ধাবণ কবৈত ছী,জিনকা দেরগণ সদিখন নমন কবৈত ছথিন আ জে অপনেক জ্যোতি মে সন্নিহিত ছথি, তাহি অপনেক স্বকপহূত হুঁহেত৷ কান কেব নমন কবৈত ছী ।

ব্রজামি নিহঁ শৈবণঁ গ্বহেশঁ স্থাণ্বুঁ প্রপদ্যে গিবিশঁ প্ববাণম্ ।
শিরঁ প্রপদ্যে হবমিন্দুমৌনি পিনাকিনঁ ব্লী শৈবণঁ ব্রজামি ॥

হম সদিখন কার্ত্তিকেযক স্বামীক শৈবণ মে ছী । স্থাণ্বক আশ্রয নৈত ছী , কৈনাশৈ পব রিবাজমান প্ববাণপ্বরুষক শৈবণ মে ছী , সরহেক কণ্ঠ হাবনাক কাবণ অহাঁ কে হব কহন জাযত অছি , অপনেক মাথ পব চানক মুকুব শৌভাযমান অছি আ অপনেক পিনাক নাম সঁ ধনুষ ধাবণ কেনে ছী; হম অপনেক শৈবণ গ্রহণ কবৈত ছী ।

এহি প্রকাব ভগরান কপর্দীক স্তুতি কহ শঁঙ্ককর্ণ ধবতী পব দণ্ড জকাঁ নেঠি গেনাহ । তখনহি শিরস্বকপ উঁদ্েষ্ঠ নিঁগক প্রাদ্বর্ভার ভেন, জে জ্ঞানময আ অনন্ত আনন্দস্বকপ ছন । মহাম্ো শঁঙ্ককর্ণ মুক্ত ভহ সর্বর্যাপী নির্মন শিরস্বকপ ভহ ওহি নিঁগ মে সমা গেনাহ ।

..............শৈষ আগিনা অঁক মে

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.४.आचार्य रामानंद मंडल-महर्षि परशुराम के सीता से बिआह प्रस्ताव



आचाय ेरामानदं मडंल

महर्षि परशराुम के सीता स ेबिआह प्रस्ताव

महर्षि बाल्मीकि कृत रामायण आ संत तुलसीदास कृत रामचरितमानस में सीता बिआह प्रसंग में महर्षि परशुराम के प्रवेश धनुष भंग के उपरांत धनुष

यज्ञशाला मे प्रवेश होइत हय।

परंच संत लाल दास कृत मिथिला रामायण में एगो विस्मितकारी रहस्योद्घाटन हय कि महर्षि परशुराम स्वयंबर से पहिले जनक दरबार जनकपुर मे आयल रहतन। सीता के देखके राजा जनक से पुछलन इ दिव्य बालिका कोन हय।इ बालिका त विष्णु प्रिया लगैत हय।राजा जनक कहलन कि इ बालिका हमर पुत्री सीता हय।तब महर्षि परशुराम सीता से बिआह के इच्छा जतैलन आ सीता के मांग कैलन।

राजा जनक कहलन कि अभी उपयुक्त समय न हय। अपने तपस्या करे जायल जाव। उचित समय पर आयब। महर्षि परशुराम जनक से कहलन कि अंहा सीता के बिआह के लेल इ प्रस्ताव राखब के जे शिव धनु के प्रत्यंचा चढ़ा देत वोकरे से सीता के बिआह होयत। महर्षि परशुराम के इ गर्व रहैन कि अइ शिव धनुष के हमरा बिना कोनो इ काज न क सकय हय।वो तपस्या करे चल गेलन।

जौं राम शिव धनुष तोड़ के टंकार सुनके ऋषि परशुराम जनकपुर अयलन आ अपन क्रोध जतैलन।बाद मे अपन धनुष के प्रत्यंचा चढ़ाबे के परीक्षा राम से लेलन।राम के परीक्षा मे पास होयला पर रामावतार जान के पुनः तपस्या हेतु हिमालय चल गेलन।

लाल दास कृत मिथिला रामायण के पंक्ति द्रष्टव्य हय।

चौपाई -

तदनन्तर भृगुपति सम्प्राप्त।भेल जनकपुर भयसौं व्याप्त।
देखि विभव मिथिलाक अनूप।क्षणभरि छला परसुधर चूप।
मिथिलापति कयलनि सत्कार। क्षत्रिय नाशक जनिक कुठार।
देखल जानकिक अनुपम देह।सुरकन्याक भेल संदेह।
नृपसौ पुछल कहू ई नीकि। लक्ष्मी सन के कन्या थीकि।
बुझि पड़ देखयित हिनकर भाल। विष्णुवधु सनि विभव विशाल।

जनक कहल महि जोतल जखन। कन्या लाभ महीसौं तखन।
परशुराम कहलनि अगुताय।नृप हमरहिं कन्या देल जाय।।
कन्यारत्न हमर छथि योग्य। पाणिग्रहण करब सुख भोग्य।।
से सुनि कहल जनक महराज। अपने जाइत छी तप काज।।
अपने रहब समाधि लगाए।गिरि कंदर शत वर्ष बिताए।।
वनमे कन्या रक्षा हीनि।अबला रहतिह ककर अधीनि।।
अपने एखन विपिन गेल जाय।समय स्वयंबर आयल जाय।।
कहल परसुधर गर्वित वाक।सुनु नृप ई थिक शिवक पिनाक।।
जौं हमरा तपमे लग देरि।धनुमुख करब विवाहक बेरि।।
आबथि जखन वीर समुदाय।एहन प्रतिज्ञा देव सुनाय।।
जे एहि धनु पर तंतु चढ़ाव।सैह वीर सीताकां पाब।।
से सुनि जनक भेला आंनद। कहलनि बेश -बेश सानंद।।
परशुधरक मनमे ई भाव।बिनु हमरे के धनुष उठाव।।
दोहा -
परशुराम तप हित तखन,गेला हिमालय प्रांत।
योगासन मन ईश पद, लगला भजय एकांत।।

-आचार्य रामानंद मंडल सीतामढ़ी।

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.५.होलीक अवसरपर "विदेहक उपाधि"

होलीक अवसरपर "विदहेक उपाधि"

होलीक अवसरपर प्रस्तुत अछि "विदेहक उपाधि"। ई उपाधि धारण करथि साहित्यकर्मी आ विदेहक संग जुड़ि सार्थक काज दिस आबथि से कामना............(प्रस्तुति विदेह टीम)

1. अरविन्द ठाकुर- आब भेटि रहल अछि।
2. जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल- निपत्ता।
3. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'- मात्र प्रेमसँ काज नहि चलत।
4. शरदिन्दु चौधरी- हम उपेक्षित कहियो नै रहलहुँ।
5. कथाकार अशोक-पुरस्कार हाथक मैल छै।
6. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'-मधेशक मठाधीश।
7. लक्ष्मण झा सागर -सत्य बातक काल्पनिक लेखक।
8. नरेन्द्र झा - हम भने आर्थिक लेखक छी।
9. प्रो. डा. रामावतार यादव - धरना बला सभ भाषावैज्ञानिक बनि गेल।
10. हितनाथ झा-हम आलोचक कहिया बनि सकब?

11. शिव शंकर श्रीनिवास - प्रतीक्षा, प्रतीक्षा आ मात्र प्रतीक्षा।

12. नारायण जी चौधरी- गोहि उर्फ पोखरिक रखबार।

13. जगदीश प्रसाद मंडल - हम अपने बनि गेलहुँ।

14. सुभाष चंद्र यादव - अपने अकादमी अपने वार्ता।

15. राजदेव मंडल - कविताक राजमिस्त्री।

16. सुशील - कलकत्तामे कियो ने चीन्हैए।

17. दिनेश कुमार मिश्र- कोसी नदीक सहेली।

18. अशोक झा (मिथिला विकास परिषद्)- जे छी से हमहीं छी।

19. वीरेन्द्र मल्लिक - लाइफटाइम अचीभर।

20. परमेश्वर कापड़ि - भ्रमरक डंकसँ बोखार भेल।

21. भीमनाथ झा - खाली आलेख बेरमे खोज करैए हमरा।

22. नचिकेता -जिनका प्रबोध सम्मान भेटल छनि मुदा अकादमी पुरस्कार नहि तिनके हम देबनि।

23. गंगेश गुंजन - कियो चर्च नहि करैए।

24. प्रदीप बिहारी-आब हमहूँ 'पहिल' बला लिस्टमे आबि गेलहुँ।

25. योगानन्द झा- हरेक मंच हमरे अछि।

26. चन्द्रेश- दुर्भाग्यसँ "मणि" भेटल।

27. मुन्नाजी - कियो बीहनिकथाक अस्तित्व नहि मानैए।

28. प्रीति ठाकुर - चित्रकथा छोड़ि किछु नै।

29. वीणा ठाकुर - साहित्य अकादमीक नेहरू। सभ गलती लेल जिम्मेदार।

30. रमेश- अनचिन्हार डसने अछि।

31. डॉ. कैलाश कुमार मिश्र - हमर गाम अरेड़ अछि।

32. रबीन्द्र नारायण मिश्र - एखन हम उपन्यास लीखब शुरुए केलहुँ अछि।

33. बिनयानंद झा - मिथिलाक सभ जिलाक विकास मधुबनीसँ भेल छै।

34. शैलेन्द्र आनन्द- हमरो नहि भेटत हम त्रिकोणक तेसर कोण छी।

35. कल्पना झा (पटना)- आलोचनासँ पाठकीय दिस।

36. नबोनारायण मिश्र - आब दिल्ली सेट।

37. गजेन्द्र ठाकुर -40 बर्ख धरि छातीपर बैसल रहबै।

38. अजित कुमार झा - के पड़त झमेलामे।

39. दिलीप कुमार झा - आँगनमे आन्दोलन उर्फ दरबज्जापर धरना।

40. नारायणजी- सुतरि गेल।

41. प्रदीप पुष्प -मुरझाएल पुष्प।

42. अभिलाष ठाकुर-कहियो काल

43. कुंदन कुमार कर्ण - साफे गाएब।

44. कीर्तिनाथ झा -कुरल केर आसा पुरल नै।

45. धनाकर ठाकुर -परिषद्सँ परिषद् धरि।

46. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी' - साढ़ू संसारक सभसँ नीक लोक होइत छै।

47. गौरीनाथ- के छथि अरविन्द ठाकुर?

48. शेफालिका वर्मा-हमरोपर विशेषांक निकलि गेल।

49. श्रीधरम- उपन्यासक कहबैका।

50. सियाराम झा 'सरस' - आब गजल नै सम्हरैए।

51. शिव कुमार टिल्लू - मोहन भारद्वाजक सपनासँ एकटा गीतकार धरि।

52. विभा रानी- अपने मनमानी।

53. कुणाल - सभ सांप्रदायिक छै।

54. विनय भूषण ठाकुर - हरेक विधामे फेल।

55. रविन्द्र कमार चौधरी - सावधान रहलाक बादो अकादमी नै पूछैए।

56. मुकेश दत्त- हम संस्थासँ बाहर नै छी।

57. चंदना दत्त- बेसी लीखि की करब?

58. शैलेन्द्र मिश्र- कविता पाठ केर भीडियो।

59. रमेश रंजन - साहित्य नाटकेसँ चलैत छै।

60. विजय इस्सर - एखनो उताहुल छी।

61. कामेश्वर झा कमल - बिना पानि-कादोक कमल छी।

62. मुन्नी कामत - फाइनलसँ बाहर।

63. केदार कानन - सभसँ 'संकल्प' लिया कऽ छोड़बै।

64. डा. शिव कुमार मिश्र - एक दिन सभकेँ पुरातत्व बनि जेबाक छै।

65. प्रेमकान्त चौधरी-संस्था तऽ व्यक्तिगत काजक संवाहक छै।

66. उदय चन्द्र झा 'विनोद'- सभ किछु विनोदहिमे भेल।

67. लाल देव कामत - छोट पाठकीय

68. आचार्य रमानंद मंडल - जीवनकेँ मानकीकरण सेहो हेबाक चाही।

69. सुरेन्द्र ठाकुर - बाबू साहेब चौधरीसँ शुरू आ बाबू साहेब चौधरीपर खत्म।

70. चन्द्रमणि झा - पुरस्कारक नामक रागपर हम कतेक गाबि सकब?

71. बैद्यनाथ चौधरी 'बैजू' - अतेक काज केलाक बादो दरभंगिया हमरा शिक्षा माफिया कहैए।

72. दमन कुमार झा - अपन सभ इच्छाक दमन कऽ लेलहुँ।

73. आशा मिश्र - एखनो उचाट लागल अछि।

74. नीरजा रेणु- कहाँ कियो बात करैए।

75. अमरनाथ - कबकब।

76. विश्वनाथ - आब साक्षात्कार नै।

77. विभूति आनन्द - अभिलाषा-अभिनंदनग्रंथक।

78. शैलेन्द्र कुमार झा - बुढ़ारीमे सगर राति जागब।

79. प्रेम मोहन मिश्र- नै सम्हरल।

80. भवेशचन्द्र झा शिवाशं- जूरी बना कऽ अइ बेर हलाल कऽ देलक।

81. मंजर सुलेमान- हो अल्ला, केहन मंजर देखेलह।

82. महेन्द्र नारायण राम - मुख्यधाराक जाति फिलर।

83. सत्येन्द्र कुमार झा - दरभंगे धरि।

84. हीरेन्द्र झा - सगर राति केर प्रबंध संपादक।

85. देव शंकर नवीन - आब पुरान भेल जा रहल छी।

86. रमाकान्त राय रमा- जवानीमे किछु नै भेल तँइ फेसबुकपर ललितगर फोटो दैत छियै।

87. ईशनाथ झा - कांग्रेसी कॉलेजमे छी तँइ भाजपाक विरोध करब हमर काज भेल।

88. नाटककार आनन्द कुमार झा - जहिया मूल पुरस्कार घोषित हेतै तहिये नाटक लीखब।

89. अजित आजाद - दू बौहुसँ हारल आ नवकी प्रेमिकाक मारल।.

90. नील माधव चौधरी-नवीन वियोगी चौधरी।

91. विजय चन्द्र झा- तालकटोराक तालमे।

92. विनोद कमार झा सरकार - फेस्टीभल करबै तऽ कहू।

93. बुद्धिनाथ मिश्र- मैथिलीमे अकादमी भेटब सहज छै।

94. चन्द्र मोहन कर्ण - केकरा कतेक दियै?

95. मधुकान्त झा- हमर लट लीलामे मधु भरल छै।

96. केष्कर ठाकुर - PHD चाही?

97. कामिनी- दोसर गिलास केर खोजमे।

98. चन्दन कमार झा - मूल पुरस्कार लेल जगबे करबै।

99. रमानन्द झा रमण - एसाइन्मेंटक महंथ।

100. तारानन्द वियोगी- हमरा अप्रमाणिक साबित कऽ देलक।

101. अंशुमान सत्यकेतु - मुख्यधाराक मोड़पर।

102. निर्मला कर्ण - नुकाएल अग्निशिखा

103. कुमार मनोज काश्यप - हमरा बीहनि कथा नै चाही।

104. परमानन्द लाल कर्ण - लिप्यांतरण करै छी।

105. संतोष कुमार बटोही -लक्ष्यक पता नै।

106. डा. जियाउर रहमान जाफरी - मैथिलीमे गजल लिखनाइ छोड़ा देलक।

107. जगदानंद झा 'मनु' - फेरसँ ताल ठोकब।

108. राजकिशोर मिश्र - पोथी पठबै छी।

109. सुशील लाल दास - तमिल दिस दोहा मैन।

110. दयानंद झा (दड़िमा) - हमर अनुवाद कियो ने पढ़ैए।

111. पं. दयानंद झा - छंदशास्त्री माछ भंडार।

112. सत्यनारायण झा - ओहिना किछु लीखि लैत छी।

113. प्रणव झा - आब कने-मने लीखैत छी।

114. भैरव लाल दास - गाँधी लाल दास

115. भवनाथ झा - जनकपुर भारतमे छै।

116. अंजय चौधरी - पीढ़ी सह विशेषण सह दशक विशेषज्ञ।

117. संतोष कुमार मिश्र - हम तऽ मैथिलीक पोसपुत छी।

118. धीरेन्द्र झा 'मैथिल' - उपन्यास कीनू।

119. रघुनाथ मखिया - भोजनो बना कऽ भुखले रहलहुँ।

120. डा. आभा झा - संस्कृताह।

121. किशन कारीगर - पुरस्कार लेल अलगे कारीगरी चाही।

122. कुन्दन कर्ण - भाजपा समर्थित बीहनि कथा।

123. धीरेन्द्र कुमार झा - प्राइभेटे सही, कहुना पुरस्कारक लिस्टमे नाम आएल।

124. कमल मोहन चुन्नू - मुन्नू केर प्रतीक्षामे।

125. चण्डेश्वर खाँ- कच्छमच्छी छोड़ा देबनि।

126. ऋषि वशिष्ठ - दानव दल केर ऋषि।

127. मेनका मल्लिक- अनुवाद केर मल्लिका।

128. अनमोल झा - लघुकथाक मोजर नै।

129. किशोर केशव- हमर नाम नै कहबै।

130. डा. राम चैतन्य धीरज - हरेक धीरज केर एक सीमा एक रेखा होइत छै।

131. विद्यानन्द झा- साहित्य शास्त्रीय नहि चाही मुदा शास्त्रीय संगीतमे रुचि।

132. मिथिलेश कुमार झा - दस-बीस बर्खपर तऽ मंच भेटैए तकरा कोना छोड़ू।

133. कुमार मनीष अरविन्द- जंगले-जंगल महल धरि।

134. आशीष अनचिन्हार - पुरस्कार चाही तँइ आब चुप रहैत छी।

135. राजकुमार मिश्र - बिठुआमे कोनो दम नहि।

136. कृष्णमोहन झा मोहन - ग्लोबलो गाममे राजनीति छै।

137. शभेन्दु शेखर- मुल्लाक दौर महजिद धरि।

138. बैकुण्ठ झा - गजल बहरमे लीखू मुदा मात्राक्रम किए लीखै छी।

139. बीरेन्द्र कमार झा - हम अहिना लीखै छी।

140. प्रीतम निषाद- आन्दोलन विषाद दैए।

141. महेन्द्र - पातपर बैसले छी।

142. धीरेन्द्र प्रेमर्षि - माइक बलपर लेखक।

143. मन्त्रेश्वर झा - आब छोड़ि दिअ।

144. गंगानाथ झा गंगेश- अपना मोने नै लीखब।

145. अरविन्द अक्कू - फुटानी चौक केर सरदार।

146. सस्मिता पाठक- उपराग नहि।

147. अशोक अविचल - हमरो कार्यकाल अहिना छल।

148. डा. बासुकीनाथ झा - आब जे हो सभ मान्य छै।

149. अमरनाथ झा 'भारती' - भोरुकवासँ पहिने अस्त।

150. दीपक दिनकर - निपत्ता।

151. आनंदमोहन झा - व्याख्यानमालाक चसक।

152. राजीवरंजन झा -शौकिया।

153. राजीवरंजन मिश्र - सालमे एक मास दर्शन देब।

154. परमेश्वर झा 'प्रहरी' - हम कतहुँ नहि।

155. काश्यप कमल - अछिंजलेसँ पएर पखारब।

156. रेवतीरमण झा - अमेरिकी मैना

157. अयोध्यानाथ चौधरी - कहू किनकर अनुवाद छूटल।

158. बाबा वैद्यनाथ - आब हिन्दिएमे लीखब।

159. सतीश वर्मा - ने पत्रकार ने लेखक।

160. कुमार राधारमण -अपने वर्ग पहेलीमे फँसल।

161. देवांशु वत्स - कहियो काल चित्रकथा।

162. गंगा झा - टूटल मंचक निर्देशक।

163. दिनेश यादव - नेपालोमे ब्राह्मणवाद छै।

164. किशोर ठाकुर - हमर मिथिला हाट कब्जा कऽ लेलक।

165. सच्चिदानंद सच्चू - अतेक उपन्यास लिखलाक बादो मोजर नहि।

166. बिनीत ठाकुर - कहियो काल उगबै।

167. प्रवीण कुमार झा- बिना डाटा, बिना नेट बला सवा लाखक मोबाइल।

168. अशोक झा 'भोली' उर्फ भोली बाबा- खरापो लोक मंच देत तऽ ओकरा नीक कहबै।

169. मुकेश आनंद- हम ओकील छी से जानि कऽ हमर कथाक आलोचना करू।

170. रामबाबू सिंह- बस चौपाड़िए भरि।

171. मुरारी कुमार झा- हमर साइकिले हवाइ जहाज अछि।

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

पद्य

३.१.अम्बालिका कुमारी- वसंत



अम्बालिका कुमारी

वसतं

जखन कोइलीक कूक कान मे पड़ैत अछि /
जखन गाछ सँ पात भूमि सँ मिलैत अछि /
खेत जखन हरियर कचोर भ जाइत अछि /
पीयर-पीयर सरसोकें चादरि ओछा जाइत अछि /
वसंत आबि जाइत अछि।

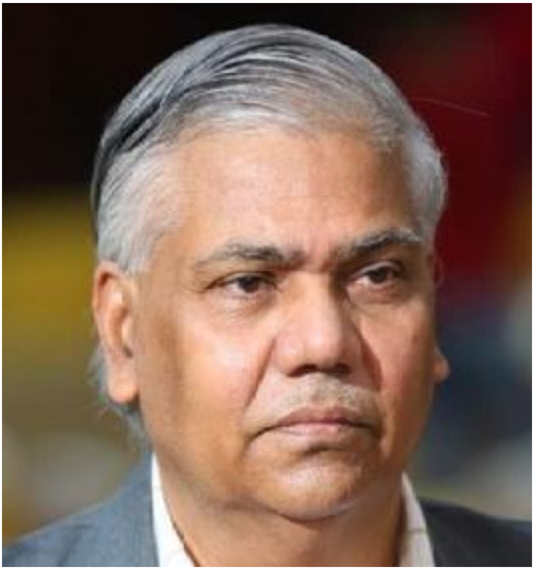
जाड़ कें टाटा आ बाइ बाइ करैत अछि /
मंद मंद हवा सुगंध भ' बहैत अछि/
नील रंग आकाश मे पंछी उन्मुक्त उडैत अछि /
मोन सँ गीत कोनो सहजे फुटि जाइत अछि /
वसंत आबि जाइत अछि।

गाछी में मंजर मदहोश क' जाइत अछि /
लोकक चेहरा पर अबीर चढि जाइत अछि /
कृष्णक तान राधा कें घीच ल' अबैत अछि /
वसंत आबि जाइत अछि , वसंत आबि जाइत अछि ।

-अम्बालिका कुमारी; शोध छात्रा, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.२.राज किशोर मिश्र-हम बेटी छलहुँ...



राज किशोर मिश्र

हम बेटी छलहुँ...

हम अहाॅंक बेटी छलहुँ,
तैं कोखि मे हमरा मारि देलहुँ,
दुनिओ देखि ने सकलहुँ हम,
पहिनेहे हमरा टारि देलहुँ।

हमहूँ सन्ताने छलहुँ,
तखन किएक ई गति भेल?
कोन हमर अपराध छल ?
एहन किएक कहू मति भेल?

प्रपंच, छल नहि जनैत छलहुँ,
किएक तखन अन्याय?
किए पक्षपात, किए एहन असरधा ?
पूछै छी अए माय !

बूझि नहि सकलहुँ ,शक्तिपुञ्ज हम,
चिन्हि ने हमरा सकलहुँ,
हम चन्द्रकांत मणि, सूर्यकांत मणि,
अहाँ झिटुका बुझि कऽ अँकलहुँ।

लक्ष्मी के हम रूप छलहुँ,
हम सरस्वती के वाणी,
'असुर भयाउनि' हमहूँ बनितहुॅं,
बनितहुँ बिकराड़ भवानी।

बनितहुँ हम गार्गी, मैत्रेयी,
हम झाँसीबाली रानी,
हमर पराक्रम, हमर शौर्य कैँ,
दुनिया सुनैत पिहानी।

अंतरिक्ष मे हमहूँ जयतहुँ,
बनितहुँ हम कल्पना चावला,
'इसरो 'के वैज्ञानिक बनितहुँ,
के नहि हमरा चिन्हैत, भला!

हम एस.पी बनितहुँ , कलस्टर बनितहुँ,
बनितहुँ कम्प्यूटर विशेषज्ञ,
चिकित्सिका बनि अस्पताल मे,
जीवन-दानक करितहुँ यज्ञ।

विधनाक लेखनी अपन हाथ लए ,
दऽ देलहुँ हमरा मृत्युदण्ड,
बिनु दोखे मारि देलहुँ हमरा,
मातु-पिता भऽ एहन मोचण्ड ?

छीन लेलहुँ अधिकार जीबऽ के,
की छाती एहि सँ जुड़ाएल?
मातृ -पितृ तँ देव तुल्य छथि,
अहाँ के कनिको ने कनाएल?

'माता कुमाता न भवति ' ,
तखन कोना ई भेल?
कनिआँ-पुतरा, सामा-चकेबा,
मुदा पहिने मारि देल गेल।

हमरो लेल तऽ पमरिआ नाचैत,
ओ बाजैत रानी-बेटी,
दुरागमन मे सऽख, मनोरथ,
अहाँ सँठितहुँ पेटार-पेटी।

परञ्च हमरा तँ मारि देलहुँ,

आबऽ सँ पहिने बारि देलहुँ।

हम, सराप तँ नहि देब अहाँ केँ,
परञ्च पूछब त' प्रश्न कए गोट,
माए-बाबू के एहेन हृदय होइछ?
होइत अछि नहि कोनो कचोट?

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.३.प्रमोद झा 'गोकुल'-चैलते रहब



प्रमोद झा 'गोकुल'

चलैत रेहब

चलैत चलैत
हमर जाँघ
भय रहल अछि लोथ
टटा रहल घुठ्ठी
अकड़ि रहल पुठ्ठी
पयरक पञ्जा
कहि रहल
हम लेलौं थस्स
करू आब बस्स .
घुरि तकै छी पाछाँ

रस्ता निपत्ता
गहींर अति गहींर
खत्ते खत्ता
गुज गुज अन्हार
दैवक प्रहार
बम्मा दैहना
सेहो तैहना
हाय रे कप्पार !
आगाँ पहाड़
दुर्ग अति दुर्ग पथ
भय रहल बेसम्हार
लड़ाइ जे ठनलौं
लड़ब जमि के
बमकि के जीतब
ठसकि जे ठानल
संघर्ष आर पारक
से जेना की ठमकि गेल ?
ठमकल मनुख
ठमकल नदीक वेग
जत्तै ठमकि गेल
तत्तै ठन ठन गोपाल
भय,भय जायत
ग्रास काल
तेँ ऐ
बेहाल हालो मे
हम रुकब नै

प्रवहमान नदीक वेग जकाँ
बढ़ैत रहब,चलैत रहब
वय के ठेंगा देखवैत रहब
लक्ष्य हमर समुद्र
नहिं रोकि सकत क्यो
बरु हो पथ कंटकाकीर्ण
कियेक ने !
तदपि हम बढ़िते रहब
चलिते रहब ! चलिते रहब ..

- प्रमोद झा 'गोकुल', दीप, मधुवनी (विहार) फोन-9871779851

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.४.जगदानन्द झा 'मनु'-३० टा हाइकू



जगदानन्द झा 'मनु'

तीसटा हाइकू

१

लाली सेनुर

हमर पिया केर

आयु बढ़ेतै

२

प्रेमक रस

मोनमे फूटल छै

आनन्दे हम

३

डेग नै उठै

पिया जखन आगू

मड़बापर

४

कोबर घर

पिया संगे रातिमे

मोन अधीर

५

चिट्ठी लिखलौं

खूनक आखरसँ

सिनेहीयाकेँ

६

फोन एलैये

भोरे पियाक आइ

ओ गाम एता

७

प्रेममे अहाँ

माय बनि गेल छी

हम चिलका

८

करु इलाज

प्रेम रोग लागल

यौ पतिदेव

९

पुषक जाड़

बितत कोना राति

चलि आबू ने

१०

मोन कनैए

नींद नहि अबैए

आबू यौ पिया

११

हारलौं नहि

जीवनसँ कहियो

संगे अहाँक

१२

मोनक तार

अहीँ संग जूड़ल

ई मानि लिअ

१३

हम मरलौं

गालक तिलपर

जँ अहाँ बूझी

१४

हम हारलौं

तन मन अपन

पिया सिनेहे

१५

मोनक आरि

हुनक दर्शनसँ

टूटल किए

१६

कनियाँ व’र

रौदी दाही सुखल

पलंग तोड़े

१७

नेबोकेँ स्वाद

नै लगैए पियाजी

चाँच कराउ

१८

नव कनियाँ

भरि मोन खेसारी

सुतल वऽर

१९

खाली घरमे

मचानपर खीरा

सहब कोना

२०

आगि मिझोने

भूख नहि मेटत

चाही संतुष्टि

२१

शिथिल देह

कादोमे छप-छप

अतृप्त मोन

२२

एक्के रंग छै

कारी गोर चाम ई

बत्ती बुतेने

२३

आजुक प्रेम

मकैकेँ लाबा जँका

जट-पटसँ

२४

नवकी काकी

काका संगे चलली

गामक हाट

२५

लवड़ा वऽर

फुसियाही कनियाँ

फरलै खूब

२६

करीया वऽर

सरकारी नोकरी

गोर कनियाँ

२७

मेहनतसँ

नहि हम हारब

अहाँक संगे

२८

नारीक मोन

आ पुरुषक मौन

के बुझलक

२९

गुलाब अहाँ

हम काँट रहितो

निबैह गेल

३०

दू बूँद नोर

हमर सारापर

खसा देबै ने

- जगदानन्द झा 'मनु', मोबाइल नंबर ९२१२४६१००६

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.५.आचार्य रामानंद मंडल- मैथिली/ मखाना



आचाय र्रामानदं मडंल

मथिली/ मखाना

१

मैथिली

कि हय मातृभाषा ?
कि हय भाषा?

मातृभाषा माय के बोली।
भाषा बाप के लोली।

मातृभाषा हय देसी।
भाषा हय अदेसी।

माय हय मातृभाषा।
बेटी हय भाषा।

मातृप्रधान हय मातृभाषा।
पितृप्रधान हय भाषा।

लोकभाषा हय मातृभाषा।
बर्चस्ववाद हय भाषा।

अंगिका- बज्जिका हय मातृभाषा।
मैथिली हय पितृभाषा।

अंगिका- बज्जिका हय शोषित मातृभाषा।
मैथिली हय शोषक भाषा।

अंगिका- बज्जिका हय मिथिला भाषा।
मैथिली हय दू घरिया भाषा।

अंगिका- बज्जिका आदि भाषा।
रामा बनय समावेशी मैथिली भाषा।

२
मखाना

मखाना न
हम मखान लिखब।
मिथिला पेंटिंग न
हम मधुबनी पेंटिंग लिखब।
मिथिला न
हम दरभंगा राज लिखब।
तिरहुत न
हम मिथिला लिखब।
तिरहुता न
हम मिथिलाक्षर लिखब।
तिरहुतिया न
हम मैथिल लिखब।
वैष्णव न
हम शाक्त बनब।
सिया न
हम जानकी लिखब।
धिया न
हम माय लिखब।

अंगिका बज्जिका न

हम मैथिली कहब।

अगड़ा पिछड़ा न

हम उच्च नीच लिखब।

संविधान न।

हम मनुस्मृति पढब।

श्रमण न

हम ब्राह्मण बनब।

हिंदू न

हम सनातनी बनब।

धार्मिक न

हम आडंबरी बनब।

सच न

रामा मिथक लिखब।

अपन मतंव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

